तुलसी प्रज्ञा

ISSN 0974-8857

TULSĪ PRAJÑĀ

A Peer Reviewed Research Quarterly of Jain Vishva Bharati Institute

YEAR-39 VOL.-154 APRIL-JUNE, 2012

Patron

Samani Charitraprajna

Vice-Chancellor

Editor

Prof. Jagat Ram Bhattacharyya

Assistant Editors

Samani Agamprajna

Samani Vinayprajna

Managing Editor

Nepal Chand Gang

Editorial-Board

Prof. Mahavir Raj Gelra, Jaipur

Prof. Satya Ranjan Banerjee, Kolkata

Prof. Arun Kumar Mookerjee, Kolkata

Prof. Dayanand Bhargava, Jaipur

Prof. Frank Van Den Bossche, Belgium

Prof. Bachh Raj Dugar, Ladnun

Prof. J.P.N. Mishra, Ladnun

Publisher :

Jain Vishva Bharati Institute

Ladnun-341306, Rajasthan, India

Tulsī Prajñā

A Peer Reviewed Research Quarterly of Jain Vishva Bharati Institute

YEAR-39 VOL.-154 APRIL-JUNE, 2012

Editorial Office

Tulsī Prajñā, Jain Vishva Bharati Institute
LADNUN-341 306, Rajasthan, India

Publisher

Jain Vishva Bharati Institute
Ladnun-341 306, Rajasthan, India

Printed at

Jaipur Printers Pvt. Ltd.
Jaipur-302 015, Rajasthan, India

Subscription
Three Year Rs 500/-, Life Membership Rs. 2100/-

The views expressed and facts stated in this journal are
those of the writers. The Editor may not agree with them.

अनुक्रमणिका / CONTENTS

ENGLISH SECTION

Subject	Author	Page No.
Ācārāṅga-Bhāṣyam	Ācārya Mahāprajña	05
The Impact of Other Yoga Systems on Hemacandra's *Yogaśāstra*	Prof Sagarmal Jain	10
The *Gītā* on Self Management	Dr Pratibha J. Mishra	15
Mahāvīra's Contribution to the Mankind for All the Ages	Dr Samani Shashi Pragya	25
Syādvāda and Intentional Fallacy: A Comparative Study	Sanjay Goyal	35
To Know is to Know that One Knows (An Integrative Study of Indian, Jain and Western Views)	Dr Samani Chaitya Pragya	42
Tīrthaṅkaras in Jainism - A Study	Riddhi J. Shah	49
Book Review	Ramesh Bijlani	101

हिन्दी खण्ड

विषय	लेखक	पृ. संख्या
भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था और गाँधी	डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़	75
वेदों में प्रकृति संरक्षण की प्रासंगिकता	डॉ. किशनाराम बिश्नोई	86
नैतिकता का विकास : जैन दृष्टि	प्रो. चाँदमल कर्णावट डॉ. चन्दनबाला मारु	94

विद्या से विनय

विद्या और विनय में परस्पर गहरा अनुबन्ध है। विद्यार्थियों के लिए विनम्रता बहुत महत्त्वपूर्ण वस्तु है। जैसे-जैसे अवस्था में प्रौढ़ता आती है, अनुभव परिपक्व होते हैं, विनम्रता सहज बनती चली जाती है किन्तु सोलह से तीस वर्ष की आयु में थोड़ा-सा उद्धतता का भाव पाया जाता है। यह अवस्था-जनित अहं होता है। शारीरिक शक्ति का विकास चिन्तन की नयी धाराओं का बहाव, बाहरी वातावरण का प्रभाव और स्वयं के उत्कर्ष का मनोभाव-कुल मिलाकर अहं की पृष्ठभूमि तैयार हो जाती है। अहं की ऊर्जा जितनी प्रबल होती है, विनम्रता का ह्रास होता चला जाता है। उस स्थिति में मानसिक नियंत्रण के द्वारा औद्धत्य भाव का परिहार किया जा सकता है। विद्या एक ऐसा ही नियामक तत्त्व है जो उच्छृंखल वृत्तियों को विनय के बांध में बोधकर उनके प्रवाह को मोड़ देती है।

- आचार्य तुलसी